

## संपादकीय



## 'मजदूर दिवस' पर दो शब्द ...

प्रतिवर्ष मई महीने की शुरुआत मजदूर दिवस से किया जाना मजदूर वर्ग की कड़ी मेहनत, कठोर श्रम को समर्पित है। एक मई अर्थात् 'मजदूर दिवस' पूर्ण रूपेण मजदूरों को समर्पित है जो 'श्रमिक दिवस, 'लेबर डे' 'मजदूर दिवस' एवं 'मई डे' के नाम से भी जाना जाता है। मजदूरों एवं श्रमिकों की मेहनत को सम्मान प्रदान करने के साथ-साथ उनके अधिकारों के लिए आवाज़ बुलंद करने के उद्देश्य से यह दिन मनाया जाता है। मजदूर किसी भी कार्य को संपन्न करने में अपना अहम योगदान प्रदान करता है। विश्व के बुनियादी ढाँचे के विकास में मजदूर के सराहनीय योगदान को देखते हुए इस पत्रिका का संपादन किया जाना मजदूर के कार्य को सम्मान देने के उद्देश्य से किया गया है।

अन्य अनेक विशेष दिवसों के समान मजदूर दिवस भी मजदूर एवं श्रमिक वर्ग के लिए विशेष उमंग एवं उत्साह का दिवस है। यह दिन भारत वर्ष के विभिन्न राज्यों एवं प्रांतों में भिन्न-भिन्न नामों से मनाया जाता है, जैसे तमिल मे 'उझैपलर दीनम', मलायलम में 'थोञ्जिलाली दीनम', महाराष्ट्र में 'कामगार दिवस' एवं कन्नड में 'कार्मिकर दीनाचरने' की संज्ञा से अभिहित यह दिवस विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह दिन ही नहीं बल्कि पूरा मास मजदूरों को समर्पित करने का उद्देश्य मजदूरों एवं श्रमिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागृत करने एवं शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने की मंशा से मनाया जाना उनके सम्मान का द्योतक है। प्रतिदिन आठ घंटे से ज्यादा काम करने को मजबूर करने एवं अधिकारों के हनन होने पर मजदूर को अपने हक के लिए लड़ने हेतु तत्पर होना चाहिए।

अपने स्वास्थ्य को दाँव पर लगाकर मजदूर हर उस कार्य को संपन्न करता है जो सभी के लिए दुष्कर होता है। भवन निर्माण, सड़क निर्माण ऐसे सभी कार्यों को श्रमिक अपने श्रम द्वारा पूरा करता है तथा नवीन एवं विकसित भारत बनाने में श्रमिक एवं मजदूरों का अतुलनीय योगदान उनके श्रम को दर्शाता है। 'श्रमेव जयते' जैसे मूलमंत्र द्वारा श्रमिकों को समृद्ध देश के निर्माण में अपने योगदान का द्योतक है।

देश की अर्थ व्यवस्था को मजबूत बनाने में इस वर्ग ने अपने पसीने को बहाया है तथा उद्योग धंधों की रीढ़ को मजबूत बनाने में इनका योगदान विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

आज देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह किसी भी कार्य को ऊँच-नीच अथवा श्रेष्ठ या निम्न श्रेणी में न रखकर प्रत्येक कार्य को संपन्न करने वाले व्यक्ति जैसे मजदूर, किसान, श्रमिक आदि को सम्मान की दृष्टि से देखें। किसी भी कार्य को पूर्ण करने वाला व्यक्ति विशिष्ट होता है, भले ही वह किसी भी वर्ग, जाति अथवा समुदाय से संबंधित क्यों न हो। अतः प्रत्येक कार्य को सम्मान की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। श्रमिक एवं मजदूर किसी भी कार्य की नींव रखने का कार्य बखूबी करते हैं, जिससे देश बुलंदियों को हासिल करता है अतः विशेष रूप से यह पत्रिका अपने श्रम एवं पसीने द्वारा देश को मजबूत बनाने वाले श्रमिक, किसान एवं मजदूर वर्ग के प्रति सम्मान हेतु समर्पित है। अंत में संपादक मंडल समस्त आलेख लेखक को हार्दिक आभार देता है, जिन्होंने अपने बहुमूल्य समय से कुछ समय इस पत्रिका को प्रदान किया।

प्रधान संपादक  
डॉ. संतोष कांबळे